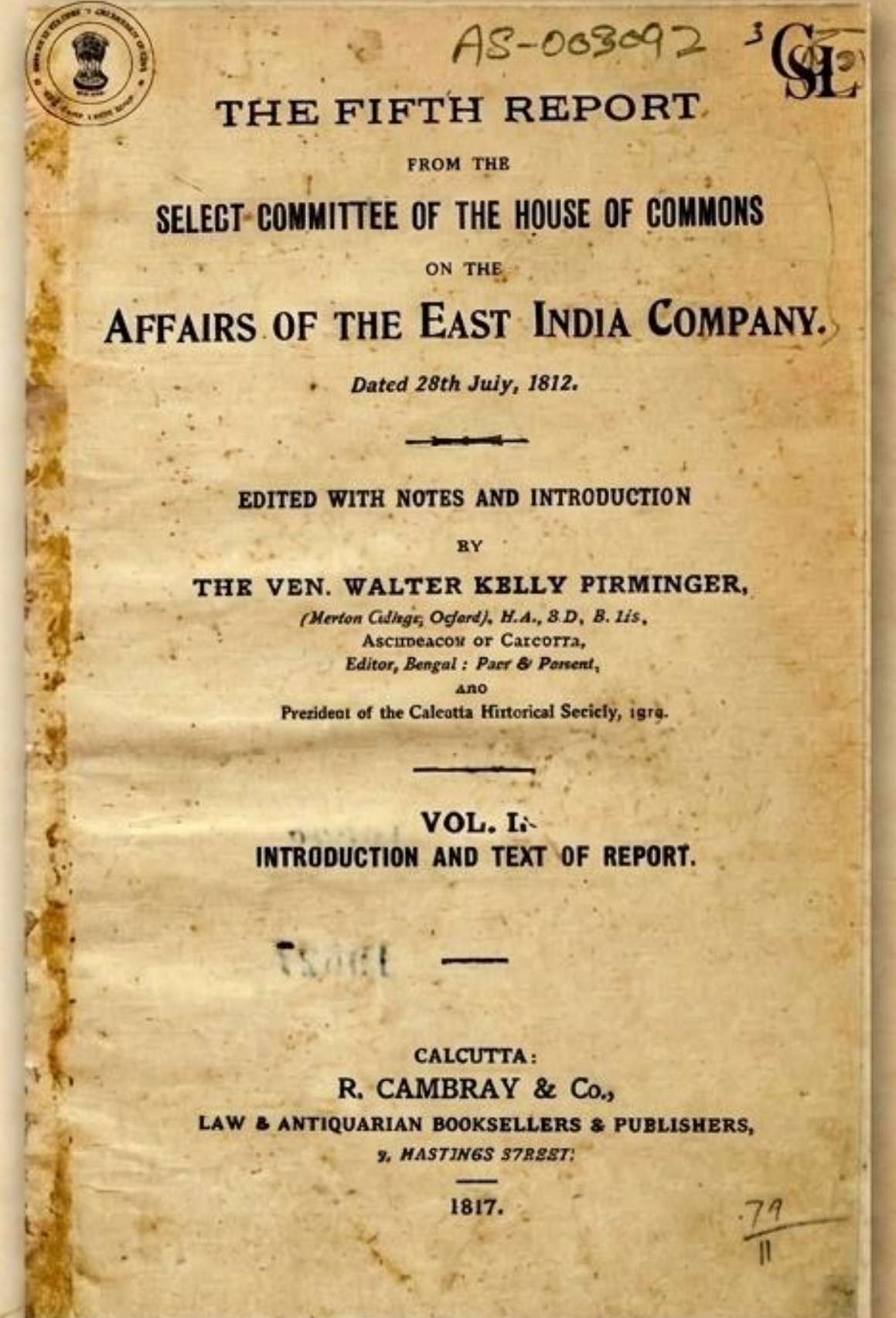


पांचवीं रिपोर्ट (1812): ब्रिटिश भारत का प्रशासनिक इतिहास

ईस्ट इंडिया कंपनी के राजस्व प्रशासन और
औपनिवेशिक साम्राज्य का क्रमिक उदय
(संपादक: W.K. Firminger)
अपराधशास्त्रीय अंतर्दृष्टि: डॉ. मृदुल श्रीवास्तव
ऐतिहासिक अभिलेखागार



बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासनिक उदय (1757-1787)

व्यापारिक कंपनी से लेकर बंगाल के प्रशासनिक शासक बनने तक के सफर और राजस्व ढांचे में आए बदलावों को समझाना।

संप्रभुता की ओर बढ़ते कदम

1757

प्लासी का युद्ध और सैन्य वर्चस्व

लॉर्ड क्लाइव की जीत ने बंगाल में नवाबों की सैन्य सर्वोच्चता को समाप्त कर कंपनी के प्रभाव की नींव रखी।



1765



दीवानी का अनुदान (Grant of Diwani)

मुगल सम्राट ने कंपनी को राजस्व संग्रह का कानूनी अधिकार दिया, जिससे वे औपचारिक रूप से प्रशासनिक ढांचे का हिस्सा बने।

"छिपी हुई व्यवस्था" (The Masked System)

संप्रभुता हासिल करने के बावजूद, कंपनी ने शुरुआत में नवाब के नाम पर शासन करना जारी रखा ताकि अन्य यूरोपीय शक्तियों के विरोध से बचा जा सके।

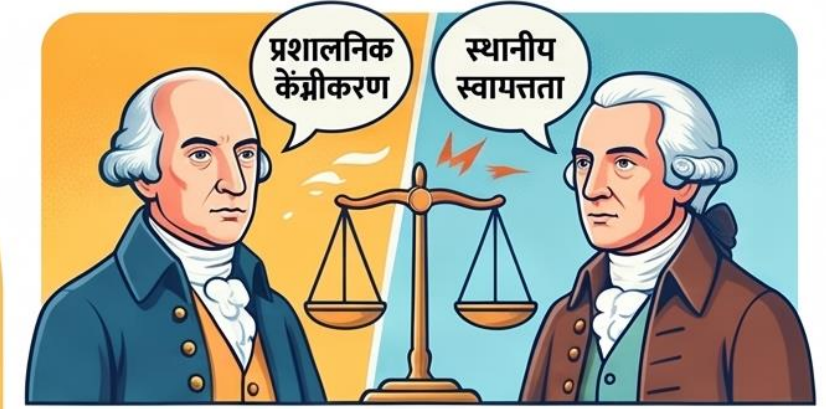
राजस्व प्रशासन का विकास



1769

पर्यवेक्षकों (Supervisors) की नियुक्ति

स्थानीय जिलों में राजस्व मामलों की जांच और सुधार के लिए पहली बार यूरोपीय अधिकारियों को नियुक्त किया गया।



हेस्टिंग्स बनाम फ्रांसिस: वैचारिक संघर्ष

बारेन हेस्टिंग्स और फिलिप फ्रांसिस के बीच राजस्व नीतियों और संप्रभुता के दावों को लेकर गहरा नीतिगत मतभेद रहा।

1786



1786

राजस्व बोर्ड (Board of Revenue) की स्थापना

प्रशासन को केंद्रीकृत करने के लिए एक स्थायी बोर्ड का गठन किया गया, जिसने आधुनिक कलेक्टर प्रणाली की नींव रखी।

बंगाल में राजस्व प्रशासन के मुख्य चरण

वर्ष	प्रमुख प्रशासनिक निकाय	मुख्य भूमिका
1769	चयन समिति (Select Committee)	राजस्व और कार्यकारी प्रबंधन
1772	सर्किट समिति (Committee of Circuit)	जिलों में राजस्व बंदोवस्त की शुरुआत
1781	राजस्व समिति (Committee of Revenue)	प्रांतीय परिषदों को हटाकर केंद्रीकृत नियंत्रण

संदर्भ और मुख्य विचार: साम्राज्य का असली आधार

ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत पर कब्ज़ा किसी एक महान सैन्य विजय का परिणाम नहीं था, बल्कि यह राजस्व (लगान) वसूलने की व्यावहारिक आवश्यकता से उत्पन्न हुआ एक क्रमिक विकास था।



पांचवीं रिपोर्ट क्या है?

1812 में ब्रिटिश संसद द्वारा कंपनी के भारतीय प्रशासन, विशेषकर राजस्व और न्याय व्यवस्था की गहन जांच रिपोर्ट।



मुख्य तर्क

कंपनी का मुख्य उद्देश्य व्यापार था, लेकिन मुग़ल व्यवस्था के पतन के कारण उन्हें राजस्व संग्रह (दीवानी) का काम संभालना पड़ा।



प्रशासनिक मजबूरी

दिन-प्रतिदिन के कर संग्रह की आवश्यकता ने एक व्यापारिक कंपनी को एक संप्रभु राज्य में बदल दिया।

मिथक बनाम यथार्थ: प्लासी का युद्ध (1757)

लोकप्रिय मिथक (The Myth)

रॉबर्ट क्लाइव की एक महान सैन्य विजय।

एक सोची-समझी योजना जिसके तहत बंगाल पर अधिकार किया गया।

भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की 'स्थापना' का निश्चित क्षण।

ऐतिहासिक यथार्थ (The Reality)

यह विजय सैन्य कौशल से अधिक मीर जाफ़र जैसे दरबारियों के विश्वासघात का परिणाम थी।

कंपनी का उद्देश्य केवल अपने व्यापारिक विशेषाधिकारों की रक्षा करना था, राज्य करना नहीं।

प्लासी ने केवल राजनीतिक प्रभाव दिया; वास्तविक प्रशासनिक नियंत्रण बहुत बाद में आया।

“क्लाइव ने जानबूझकर कोई बड़ा युद्ध नहीं लड़ा... प्लासी को किसी भी दृष्टि से एक महान सैन्य उपलब्धि नहीं कहा जा सकता।”
(W.K. Firminger)

एक अनिच्छुक संप्रभु: 'क्षेत्राधिकार' से कंपनी का परहेज़

लंदन में बैठे कंपनी के निदेशक 'क्षेत्र' (Territory) हासिल करने के सख्त खिलाफ थे। वे केवल एक ज़मींदार के रूप में व्यापारिक लाभ चाहते थे, एक शासक के रूप में नहीं।



1717

1



सम्राट फर्रुखसियर से 38 गांवों की ज़मींदारी के अधिकार (केवल वाणिज्यिक सुविधा के लिए)।

1757-1760

2



24 परगना और वर्धमान, मिदनापुर, चटगांव की प्राप्ति (केवल सैन्य खर्च निकालने के लिए)।

1765 (इलाहाबाद की संधि)

3

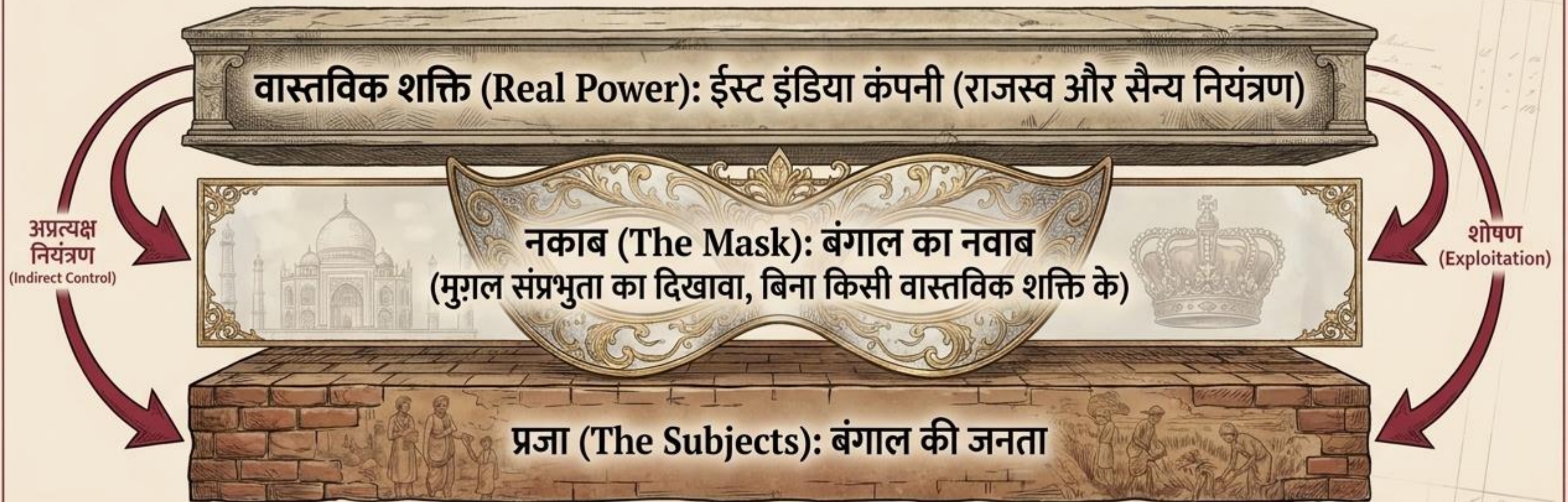


दीवानी का अधिकार। कंपनी ने राजस्व का अधिकार लिया, लेकिन प्रशासन (निज़ामत) नवाब पर छोड़ दिया।

नकाबपोश प्रणाली (The Masked System)

क्लाइव की 'दोहरी शासन प्रणाली' का उद्देश्य फ्रांसीसियों और अन्य यूरोपीय शक्तियों की ईर्ष्या से बचना था। कंपनी ने मुगल सम्राट के 'दीवान' के रूप में काम किया, जबकि नवाब केवल एक मुखौटा बना रहा।

The Flow of Power



‘पुआल का प्रेत’ (A Phantom of Straw): संप्रभुता का अंत

“

मुबारक-उद-दौला (नवाब) जैसे
पुआल के प्रेत के संबंध में, उसकी
संप्रभुता के प्रश्न को उठाना ही इस
न्यायालय का अपमान है... मैं इसे
एक मज़ाक मानता हूँ।”

”

— Justice Stephen Lemaistre,
Supreme Court (1775)

The Case (Roy Radha Churn, 1775)

क्या नवाब के राजदूत को राजनयिक
छूट प्राप्त है?

The Verdict

सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया
कि नवाब अब एक संप्रभु शासक
नहीं है, बल्कि ब्रिटिश सत्ता के अधीन
एक प्रजा है। ‘नकाब’ पूरी तरह से
उतर चुका था।

टूटती हुई मुग़ल व्यवस्था: आदर्श बनाम वास्तविकता

अकबर और टोडरमल का आदर्श

‘तुमार जमा’ (Tumar Jama) - भूमि की वास्तविक माप और उत्पादन क्षमता के आधार पर एक व्यवस्थित, वैज्ञानिक राजस्व मूल्यांकन।



18वीं सदी की अराजकता

कंपनी को जो व्यवस्था मिली, वह पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी थी। राजस्व संग्रह एक प्रकार का ‘सैन्य कब्ज़ा’ बन गया था जहाँ फौजदार बलपूर्वक कर वसूलते थे। पुराने रिकॉर्ड नष्ट हो चुके थे या भ्रामक थे।



वैचारिक टकराव: ब्रिटिश प्रशासन की दिशा तय करने वाली बहस

	Warren Hastings (व्यावहारिकता)	Philip Francis (आदर्शवाद)
मुग़ल व्यवस्था पर विचार	पुरानी व्यवस्था टूट चुकी है	अकबर के 'तुमार जमा' पर वापसी होनी चाहिए
नवाब की स्थिति	नवाब केवल एक 'मुखौटा' है	मुग़ल संप्रभुता का सम्मान किया जाए
ज़मींदारों के अधिकार	ज़मींदार कर संग्रहकर्ता हैं, मालिक नहीं	ज़मींदार ही भूमि के प्राचीन और वास्तविक स्वामी हैं
प्रशासनिक दृष्टिकोण	प्रत्यक्ष ब्रिटिश नियंत्रण आवश्यक है	मुग़ल प्रशासन के रूपों को कायम रखा जाए

राजस्व प्रशासन का क्रमिक विकास: चरण 1 (1769-1772)

देशी दीवानों से लेकर यूरोपीय 'सुपरवाइज़र्स' तक

सर्वोच्च (Supreme)

1769 में कलकत्ता में 'Select Committee' → 1771 में 'Comptrolling Committee of Revenue'



मध्यवर्ती (Intermediate)

मुर्शिदाबाद और पटना में राजस्व परिषदें (Comptrolling Councils)।
नायब दीवान (मुहम्मद रज़ा खान) का प्रभाव कम होना।



अधीनस्थ (Subordinate)

1769: जिलों में पहले 'European Supervisors' की नियुक्ति।
1772: वारेन हेस्टिंग्स ने 'सुपरवाइज़र्स' को 'कलेक्टर' (Collectors) का नाम दिया।

राजस्व प्रशासन का क्रमिक विकास: चरण 2 (1773-1780)

प्रांतीय परिषदों (Provincial Councils) का युग

सर्वोच्च (Supreme)

गवर्नर-जनरल और उनकी परिषद (Governor-General and Council)।



मध्यवर्ती (Intermediate)

1773: छह नई 'प्रांतीय परिषदें' (कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, बर्दवान, दिनाजपुर, ढाका, पटना) स्थापित की गईं। राजस्व का विकेंद्रीकरण।



अधीनस्थ (Subordinate)

यूरोपीय कलेक्टरों को वापस बुला लिया गया। उनकी जगह कर संग्रह के लिए फिर से देशी 'अमिलों' (Amils) की नियुक्ति की गई।

राजस्व प्रशासन का क्रमिक विकास: चरण 3 (1781-1787)

केंद्रीकरण और 'राजस्व बोर्ड' (Board of Revenue) की स्थापना

सर्वोच्च
(Supreme)

1781: कलकत्ता में केंद्रीकृत 'Committee of Revenue'।
1786: इसे स्थायी 'Board of Revenue' में बदल दिया गया।



मध्यवर्ती
(Intermediate)

प्रांतीय परिषदों (Provincial Councils) को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया।



अधीनस्थ
(Subordinate)

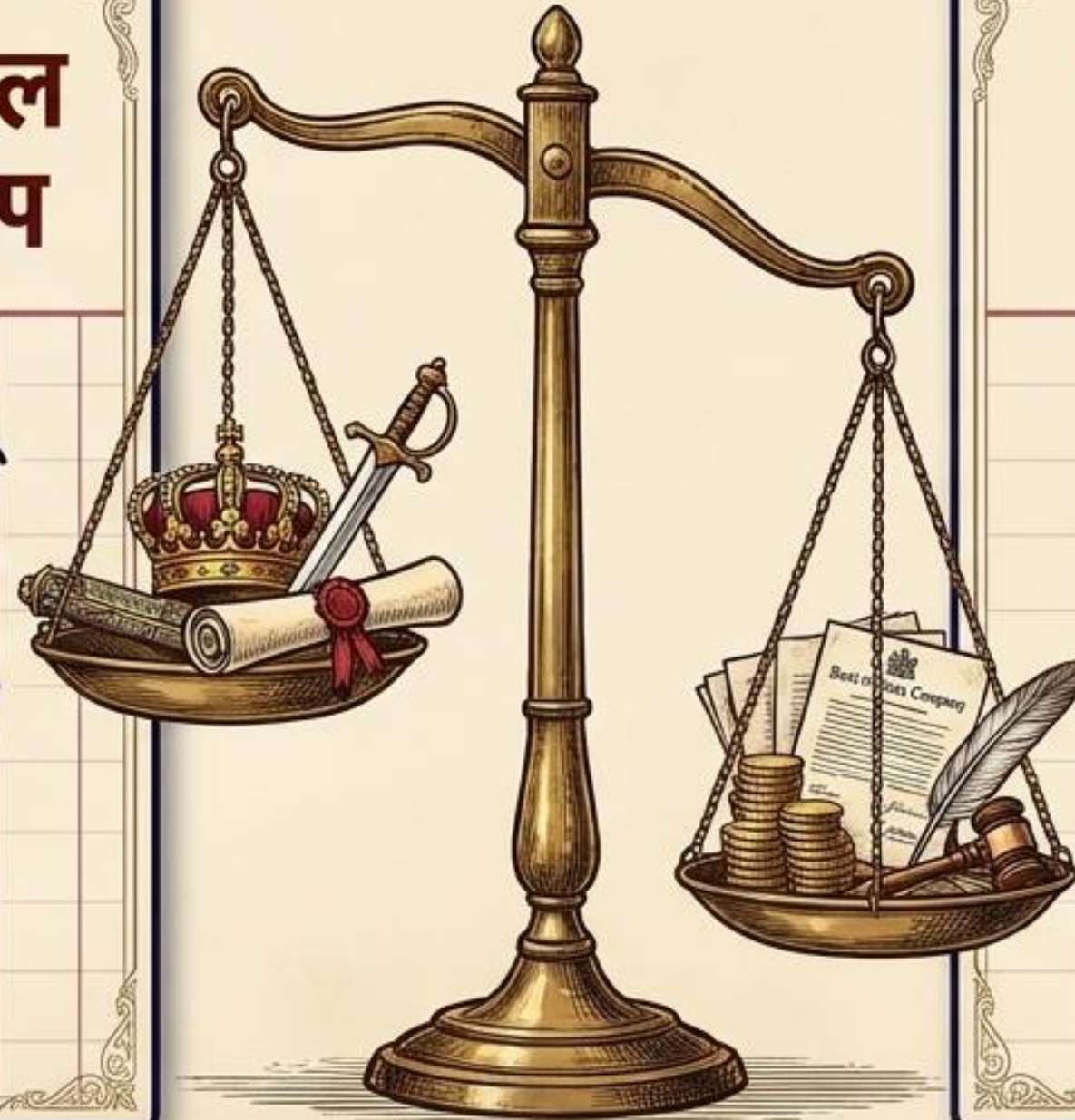
जिलों में ब्रिटिश 'कलेक्टर' की स्थायी रूप से वापसी।
बंगाल को 36 (बाद में 23) जिलों में बांटा गया।

ज़मींदारों की बदलती नियति: शासक से कर-संग्रहकर्ता तक



मुग़ल काल का स्वरूप

ज़मींदार अक्सर पराजित हिंदू राजा या स्थानीय सरदार होते थे। वे राज्य को एक निश्चित राशि (Tribute) देते थे और अपने क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से प्रशासन और न्याय व्यवस्था चलाते थे।

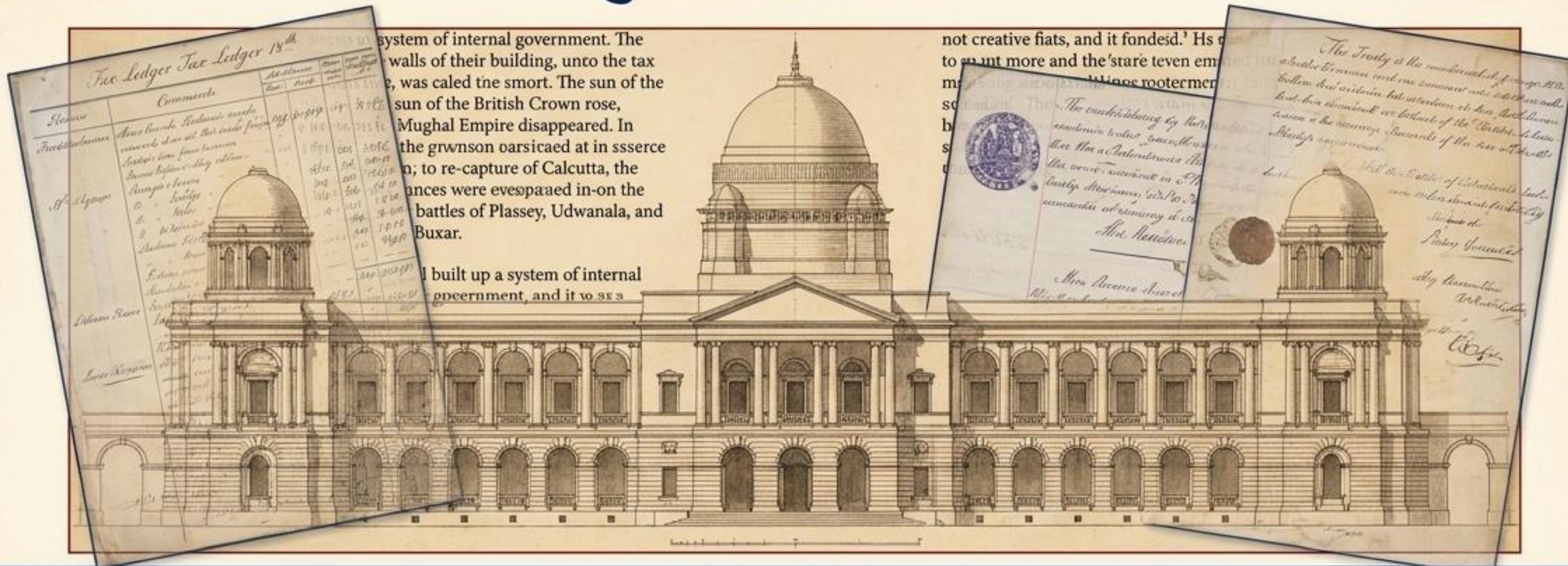


कंपनी का हस्तक्षेप



कंपनी की नीतियों ने प्राचीन ज़मींदारों को विस्थापित कर दिया। उन्हें केवल 'राजस्व ठेकेदारों' (Revenue Farmers) के रूप में देखा गया, जिन्हें उच्चतम बोली लगाने पर ज़मीन दी जाती थी। इससे ग्रामीण समाज का पारंपरिक ढांचा नष्ट हो गया।

निष्कर्ष: साम्राज्य की वास्तुकला (The Architecture of Empire)



Synthesis Insight: ईस्ट इंडिया कंपनी ने जानबूझकर कोई राजनीतिक ढांचा नहीं बनाया। उन्होंने मुग़ल सत्ता के खंडहरों पर केवल अपनी आंतरिक कर-संग्रह व्यवस्था खड़ी की। जब इस इमारत की दीवारें एक निश्चित ऊंचाई तक पहुंच गईं, तो 'मुग़ल साम्राज्य' का सूरज हमेशा के लिए अस्त हो गया और 'ब्रिटिश राज' उदित हुआ।

Final Takeaway: भारत में ब्रिटिश साम्राज्य किसी महाकाव्य जैसी विजय का परिणाम नहीं था, बल्कि वह राजस्व खातों, ज़मींदारी अनुबंधों और प्रशासनिक नियमावलियों से बुना गया एक जाल था। प्रशासन ही संप्रभुता बन गया।



CRIMINOLOGICAL INSIGHTS

BY DR. MRIDUL SRIVASTAVA

